आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 268 | ARYA SABHA MAURITIUS | 20th Apr. to 30th Apr. 2013

Om! Ahāni sham bhavantu naha sham rātrih pratidhiyatam.
Shanna indrāgni bhavatāmavobhih shanna indrā varunā rātahavyā.
Shanna indrāpushanā vājasātaw shamindrā somā suvitāya shanyoh.

Yajur Veda 36/11

Om – O Seigneur!, **Avobhih** – sous ta protection, **Shanyoh** - la joie, le bonheur, le confort, **Suvitāya** – pour nous encourager/inspirer/inciter, **Naha** – notre richesse/possession, pour nous ou envers nous, **Ahāni** – le jour, **Bhavantu** – qu'il nous soit, **Sham** - être agréable, propice, bénéfique ou convenable, **Prati** - envers nous, **Dhiyatām** – nous soutenir/protéger/garder, **Indrāgni** - l'électricité et le feu, **Bhavatām** – qu'il soit, **Rātahavyā** – avantage ou bénéfice qui soit équitable et que l'on peut accepter, **Indrāvarunā** – l'électricité et l'eau, **vājasātaw** – dans l'effort pour la production de nourriture, **Indrāpushanā** – l'électricité et la terre.

O Seigneur ! Que par ta grâce notre journée soit toujours agréable et qu'elle se passe sous les meilleurs auspices dans l'accomplissement de nos devoirs quotidiens!

Plongés dans un profond sommeil que nous puissions nous reposer paisiblement pendant toute la nuit !

Que nous soyons capable d'utiliser en divers façons et à bon escient l'énergie électrique et le feu pour le bien de tout le monde !

Que le soleil et l'eau, les producteurs naturelles de végétation et des commodités précieuses telles que les denrées alimentaires, nous soient bénéfiques!

Que l'électricité (c'est-à-dire la fondre – le tonnerre et l'éclair) agisse sur la terre pour la rendre plus fertile de sorte qu'elle produise beaucoup plus de denrées essentielles, telles que les légumes, les fruits et les plantes destinés à entretenir notre vie !

Que les bienfaits du soleil et de la lune contribuent à la maturité de nos récoltes des céréales, des légumes et d'autres commodités et que ces phénomènes naturels rendent plus juteux nos fruits et autres plantes indispensable à notre vie et notre santé !

N. Ghoorah

पल्लवन

दाम्पत्य जीवन

डा० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

सोलह संस्कारों में विवाह जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। विवाह-विधि के अन्तर्गत वर एक मन्त्र पढ़ता है। यथा –

सुमंगलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत सौभाग्य मस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन ।

प्रस्तुत मन्त्र में वह कहता है कि यह वधू सुमंगली है। विवाह में उपस्थित जनो, इस वधू को सुमंगली के ही रूप में देखें और इसे सौभाग्य का आशीर्वाद देकर ही यहाँ से प्रस्थान करें।

वर की आशा कितनी उच्च है। उसकी भावना कितनी उदात्त है। यदि वधू इस आशा को पूर्ण कर देती है तो वर-वधू, दोनों अपने दाम्पत्य जीवन में स्वर्ग-सुख का अनुभव करते हैं और यदि आशा पर पानी फिर जाता है तो वैवाहिक जीवन नरक-तुल्य बन जाता है । जीवन में घृणा और अहंकार की आँधी चल पड़ती है । प्रेम समूल नष्ट हो जाता है । यहाँ तक कि विवाह-विच्छेद तक की नौबत आ जाती है ।

विवाह एक अटूट बन्धन है। वैवाहिक जीवन में प्रेम की धारा प्रवाहित होते रहने से यह बन्धन सुदृढ़ बना रहता है। समझ एवं समझौते से काम लेने से यह बन्धन कभी भी शिथिल नहीं होता। यदि वर-वधू के गुण, कर्म और स्वभाव में समता होती है तो दाम्पत्य जीवन आदर्श हो जाता है।

मॉरीशसीय हिन्दी साहित्य शताब्दी समारोह और विश्व भाषा हिन्दी सम्मान

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

हिन्द महासागर में अवस्थित मॉरीशस एक लघु द्वीप है, पर अपनी प्राकृतिक छवि-छटा तथा इन्द्रधनुषी प्रत्यंचा के अद्‌भुत हृदय के कारण भू का स्वर्ग कहलाता है। इसे 'छोटा भारत' भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ के जन जीवन में भारतीयता कूट कूट कर भरी है। यह एक हिन्दू बहुसंख्यक देश है, जहाँ हिन्दू धर्म, संस्कृति, सभ्यता आदि फूल-फल रहे हैं और उनकी अक्षुण्ण रक्षा हुई है। ☞ शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

हमारी असीम सम्पदा

स्वस्थ शरीर दुनिया की सबसे बड़ी सम्पदा है। शरीर नीरोग होने से ही मनुष्य प्रसन्न रहता है। अगर शरीर अस्वस्थ हों तो आनन्द नहीं। संसार की धन-सम्पत्ति, सुख-भोग, परिवार, साथी, सखा, सम्बन्धी सब स्वास्थ्य की तुलना में तुच्छ है। जीवन की उन्नति और सुख प्राप्ति में स्वास्थ्य का सबसे बड़ा स्थान है। स्वस्थ शरीर ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान माना जाता है।

यह कहावत प्रसिद्ध है – 'पहला सुख नीरोगी काया' अर्थात् मनुष्य का सबसे बड़ा सुख उसका स्वस्थ शरीर है। यदि शरीर रूपी साधन गड़बड़ा गया तो दुख ही दुख है, क्योंकि हमारा शरीर ही सभी कार्यों तथा जीवन-यात्रा का प्रमुख साधन है। एक रोगी करोड़पति की अपेक्षा एक स्वस्थ भिखारी अधिक सुखी होता है। एक रोगी धनवान बढ़िया से बढ़िया भोजन पाकर भी, उसे खा नहीं सकता है, पचा नहीं पाता और मुलायम शैया पर नींद के लिए तरसता है, पर एक नीरोग व्यक्ति रूखासूखा अन्न ग्रहण करके सुख की नींद सोता है। अतः प्रभु के दिए हुए स्वस्थ शरीर की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है।

शरीर को स्वस्थ, प्रसन्न, बलयुक्त और नीरोग रखना मनुष्य का परम धर्म है और रोगी, तथा निर्बल होना दुर्भाग्य है। नीरोग और शक्तिशाली रहने के लिए सात्विक एवं संतुलित भोजन का विशेष महत्व है। आहार-शुद्धि से बदन में शक्ति आती है, मन प्रसन्न रहता है, बुद्धि तीव्र और पवित्र रहती है । मनोवृत्तियाँ निर्मल रहती हैं। पावन शरीर, मन और बुद्धि से हमारे विचार तथा सोच में पवित्रता आती है। हम धार्मिक कर्म की ओर अग्रसर होते हैं और हमारे शुभ कर्मों से सभी को लाभ होता है। इसीलिए नीरोग रहने के लिए अपने आहार-विहार का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

शरीर का मुख्य आधार भोजन है। भोजन ही मन, बुद्धि, विचार, संस्कार तथा आचरण का आधार है। भोजन बिगड़ने से आचार-विचार, स्वास्थ्य आदि विकृत हो जाते हैं। हमारा आहार जितना सात्त्विक पुष्टिकारक एवं प्रकृति के अनुकूल होगा, उतना ही हमारे अवयवों के लिए हितकारी तथा लाभदायक सिद्ध होगा। इसी लिए भोजन हमारे स्वास्थ्य के लिए हितकारी, नया-तुला और प्रकृति के अनुकूल होना ज़रूरी है। आदमी को स्वाद के लिए खाना नहीं है, अपितु अपने स्वास्थ्य रक्षा निमित्त खाना है।

आज बहुत से लोग यह नारा लगाते हैं – 'खा ले पी ले ज़िन्दगी में का बा'। जो लोग इस विचार के होते हैं वे खाने के लिए जीते हैं। वे यह भूल रहे हैं कि ज़िंदा रहने के लिए भोजन पाना, प्रकृति का नियम है और अनुचित भोजन खाना प्रकृति के विरुद्ध है। आज भोजन बिगड़ने से ही अधिकतर प्राणी अपनी जवानी में ही बीमार हो जाते हैं। अपनी संतानों के उचित भोजन और लालन-पालन पर ध्यान न देने के कारण कितने माता-पिता के बच्चे बचपन ही में बीमारी के शिकार हो जाते हैं। रोगों के इलाज निमित्त उनकी ख़ूबसूरत जवानी नष्ट हो जाती है और परिवार की ढेर सारी संपत्ति उनके रोगों को दूर करने में नष्ट हो जाती है। आज हर माँ-बाप को अपनी सन्तानों की स्वास्थ्य-रक्षा पर पूरा ध्यान देना है, ताकि वे एक स्वस्थ तथा बलिष्ठ युवा बनकर सुखी जीवन का भोगी बनें ।

मनुष्य स्वयं अपने शरीर का रक्षक और घातक होता है। अगर वह हर पल अपने शरीर की रक्षा पर ध्यान देगा, उसके पालन पोषण का पूरा ख्याल करेगा तथा सात्विक और पौष्टिक भोजन ग्रहण करने की आदत डालेगा तो वह अपने सुन्दर और सुडौल शरीर को बहुत हद तक सुरक्षित करके सुखी जीवन पा सकता है। वह दीर्घकाल तक आनन्दित, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त होकर ज़िंदगी का सफ़र तय कर सकता है। दुर्भाग्य से जो अपनी शारीरिक रक्षा का ध्यान नहीं देता तो वह जवानी ही में रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग जैसे भयानक रोगों का शिकार बनकर अल्पकाल ही में दुखी हो जाता है। भयंकर राक्षस के रूप में ये रोग उसके शरीर का नाश कर देते हैं। वह परमात्मा का दिया हुआ सुन्दर, स्वस्थ और ख़ूबसूरत शरीर स्वयं नष्ट करने वाला पापी कहलाता है, क्योंकि स्वस्थ शरीर को बीमार करना पाप माना जाता है। सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि वह अपने भोग-रोग पर पूरा ध्यान दें और योग द्वारा अपने शरीर को बचाने का प्रयत्न करें, क्योंकि योग ही एक ऐसी कला है जो हमारे शरीर को स्वस्थ, बलिष्ट और आनन्दित बनाती है।

बालचन्द तानाकूर

उच्च आदर्श वाले रामचन्द्र जी

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

हम मोरिशस में रहने वाले हिन्दी भाषियों का सम्पर्क केवल वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामचरितमानस से है जिसे रामायण ही की संज्ञा से अभिहित करते हैं क्योंकि उसमें रामचन्द्र जी के चरित का गुणगान किया गया है ।

वैसे भारत वर्ष की हर मुख्य भाषा में रामायण लिखी गई जैसे – बंगला, उड़िया, कन्नड, मलायालम, तमिल तेलुगू आदि मराठी में। हम केवल रामचरित मानस इसलिए अधिक पढ़ते हैं क्योंकि तुलसीदास ने दोहे चौपाई आदि में लिखा है जो गेय है। दूसरी तरफ़ तुलसीदास की भाषा हिन्दी नहीं बल्कि अवधी है। अवध प्रान्त की भाषा है जो कभी अपने अवध प्रान्त की सीमा के बाहर नहीं पहुँची। दूसरा कारण उसकी प्रसिद्धि का यह है कि दोहे-चौपाई की व्याख्या हिन्दी में है। २० वीं शताब्दी में हिन्दी खड़ी बोली का प्रचार-प्रसार ज़ोर-शोर से शुरू हुआ था ।

साहित्यिक दृष्टि से देखा जाय तो सुर और तुलसी में कोई बराबरी नहीं । सूर सूर थे और तुलसी शशि। सूर की भाषा ब्रज थी। ब्रज भूमि की भाषा । वह भी ब्रजभूमि को छोड़कर बाहर नहीं जा पायी। केवल खड़ीबोली हिन्दी पहुँच गयी जहाँ भी (Indian Diaspora) विकीर्णन है।

वाल्मीकि और तुलसीदास में बहुत कम समता है। तुलसी एक छोटे वैष्णव सम्प्रदाय के अनन्य भक्त थे जब कि वाल्मीकि तो ऋषि थे और ऋषियों का दृष्टिकोण, ऋषियों के सोच का दायरा असीम होता है। उनके लिए धर्म कर्त्तव्य होता है जैसे रामचन्द्र जी के लिए था। साम्प्रदायिक कवि अपने सम्प्रदाय की पुष्टि की ओर ज़्यादा ध्यान देता है जबकि एक ऋषि प्राणिमात्र की भालई सोचता है।

आज रामनौमी के शुभावसर पर हमें वह वार्तालाप याद आ रहा है जो वाल्मीकि और नारद के बीच हुआ था। वाल्मीकि दुनिया को एक ऐसी महान् कृति देना चाहते थे जो दुनिया में अमर हो जाय जिसका मुख्य पात्र पुरुषों में उत्तम हो सभी मानवी गुणों से सम्पन्न हो। वाल्मीकि के पूछने पर नारद मुनि गुणों के पुंज श्री रामचन्द्र का उल्लेख करते हैं जिनके चरित्र का वर्णन वाल्मीकि करते हैं।

रामचन्द्र जी के जीवन में बहुत संकट आते हैं। सब से बड़ा संकट वन-गमन का समाचार।अगले दिन राज्यभिषेक होना था और उसी की तैयारी चल रही थी पर एकाएक कैकेयी माता बोलती है कि पिता के कहे अनुसार तुम्हें वन जाना होगा। तो राम न आगे देखते हैं न पीछे वन-गमन को कर्तव्य समझकर शिरोधार्य कर लेते हैं। रामचन्द्र दृढ़ संकल्पी थे। जब निश्चय कर लिया तो किसी के भी कहने पर टस से मस नहीं हुए। रास्ते से लौटाने के सभी प्रयास असफल हो जाते हैं।

दूसरा रामचन्द्र जी का अद्वितीय गुण कृतज्ञता है। की हुई भलाई को न भूलना वह चाहे दुनिया उलट पलट हो जाए। सुग्रीव और विभीषण ने संकट के समय में सहायता की थी। रामचन्द्र ने सदा याद रखा और ज्यों ही मौक़ा हाथ आया दोनों के राज्य जीत कर लौटा दिए। राम की जगह पर कोई और होता तो भाई लक्ष्मण को राजगद्दी पर बिठा देते और स्वयं सम्राट बन जाते। पर नहीं ! ऐसा नहीं किया। मनुष्य का सबसे सुन्दर गहना कृतज्ञता है। आज इसकी कितनी कमी है।

आज हम सत्य को बढ़ा-चढ़ा कर कहते हैं। सत्य धर्म है, सत्य भगवान्, सत्य जीवन का सार है, सत्य के आधार पर ही यह दुनिया टीकी है।

रामचन्द्र जी के जीवन में सत्य की झलक ही झलक दिखाई देती है।

कोप भवन में जहाँ राजा दशरथ पड़े हुए हैं। रानी द्वारा रामचन्द्र जी बुलाये जाते हैं। रानी कैकेयी बोलती है रामचन्द्र को वन जाना है। रामचन्द्र छोटी रानी से कहते हैं – मैं आप को वचन देता हूँ। आप को चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। मैंने कह दिया तो किसी भी हालत में जाऊँगा। क्या ऐसा कभी हुआ कि वचन देकर मुक़र गया हूँ।

इन्हीं सब गुणों के कारण त्रेता युग से लेकर आज पर्यन्त रामचन्द्र को पुरुषोत्तम कहते हैं और आने वाले कल तक ऐसा ही मानेंगे और उनके आदर्शों से जीवन को सँवारते रहेंगे। हाँ, यह ठीक है कि अति उच्च आदर्शों को छूना कठिन है पर असम्भव नहीं। इसीलिए जीवन में आदर्श ऊँचा रखना चाहिए और उसे छूने का प्रयास जीवन भर करते रहना चाहिए।

New Books available at Dhruvanand Library

१. वैदिक सम्पति
२. संस्कार समुच्चय
३. बाल शिक्षा
४. आर्य सत्संग गुटका - अजिल्द
५. अन्त्येष्टि संस्कार
६. वाल्मीकि रामायण
७. चाणक्य नीति दर्पण
८. बाल सत्यार्थप्रकाश
९. चतुर्वेद शतकम्
१०. उपनिषद् रहस्य
११. आर्य समाज के बीस बलिदानी
१२. सत्यार्थप्रकाश स्थूलाक्षरी
१३. सत्यार्थप्रकाश अपना (सजिल्द)
१४. ईश्वरीय ज्ञान वेद ..... नई पुस्तक
१५. आर्य पथिक लेखराम .... नई पुस्तक
१६. उपनिषद् एक सरल परिचय
१७. भाषा का इतिहास
१८. यजुर्वेद भाष्य ..... अपना
१९. सामवेद भाष्य ..... नया
२०. पातंजल योग एवं महर्षि दयानन्द जीवनवृत
२१. न्याय दर्शन की मान्यताएँ ..... नई पुस्तक
२२. Makers of the Arya Samaj ..... New
२३. दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह
२४. Sanskar Vidhi English
२५. सत्यार्थ भास्कर (भाग १) अन्य प्रकाशन
२६. सत्यार्थ भास्कर (भाग २)
२७. एकादशोपनिषद् .... अन्य प्रकाशन
२८. मनुस्मृति ..... अन्य प्रकाशन
२९. CD (Swar Sangam)
३०. CD (Kanchan Kumar)
३१. The Upanishads Part 1
३२. Principal Upanishad
३३. Brhadaranyaka Upanishad
३४. Chandogya Upanishad
३५. सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द अन्य प्रकाशन)
३६. An Introduction to the Commentary
३७. Dayanand - the Architect of Modern India
३८. Vedic Concept of God
३९. Human Rights and the Vedas
४०. Confidentials Talks to Young Men
४१. Heritage of Vedic Culture
४२. Vedic Vision
४३. Secret of Vedas (Paper Back)
४४. Chemistry in Agnihothra
४५. Rational Faith in God pv
४६. Glimpses of the Atharva Veda
47. Glimpses of the Rig Veda
48. Glimpses of the Sama Veda
49. Glimpses of the Yajur Veda
50. Beliefs of Arya Samaj

पृष्ठ १ का शेष भाग

भारतीय भाषाएँ जैसे हिन्दी भोजपुरी, उर्दू, तमिल, तेलुगू, मराठी आदि प्राथमिक से माध्यमिक तथा उच्चस्तरीय स्तर तक पढ़ी-पढ़ाई जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की दमदार साहित्यिक रचनाएँ करने में यहाँ के साहित्यकार संलग्न हैं। निश्चय ही विदेशों में मॉरीशस वह अग्रणी देश है जहाँ सशक्त हिन्दी साहित्य का सृजन हुआ है।

सन् १८३४ में भारत से गिरमिटिये मज़दूर शक्कर कोठी के मालिकों द्वारा खेतों में मज़दूरी करने के लिए लाए गए थे। वे बहुसंख्यक मज़दूर भोजपुरी तथा हिन्दी भाषी थे। पं० लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी 'रसपुज' मॉरीशस के पहले कवि हुए जिनकी १११ कुंडलियों का संग्रह 'रसपुंज कुंडलिया' शीर्षक से सन् १९२३ में प्रकाशित हुआ था।

मॉरीशस हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में भी अग्रणी देश है। मॉरीशस में अब तक ५४ हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ निकल चुकी हैं। वर्तमान में ९ हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं जिनमें 'बाल सखा' और 'रिमझिम' बाल पत्रिकाएँ हैं। आर्य सभा द्वारा प्रकाशित 'आर्योदय' दीर्घकालीन पत्र है।

२ मार्च १९१३ में, मणिलाल डॉक्टर के 'हिंदुस्तानी' पत्र में मॉरीशस की पहली साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन हुआ था। इस ऐतिहासिक प्रकाशन के सौ वर्ष (२०१३ में) पूरे होने के उपलक्ष्य में विश्व हिन्दी सचिवालय ने शताब्दी महोत्सव बड़े भव्य रूप से मनाया, जिसके अन्तर्गत अनेक शैक्षणिक व साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन हुआ था। गतिविधियों का शुभारम्भ २ मार्च २०१३ की ऐतिहासिक तिथि पर ९.३० बजे महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम भारती सभागार में उद्घाटन समारोह द्वारा किया गया था। मौक़े पर देश के अनेकों विद्वानों द्वारा विशेषकर दूसरे सत्र में मॉरीशस के हिन्दी साहित्य, देश के साहित्यकारों तथा उनकी रचनाओं और पत्र-पत्रिकाओं पर खुलकर तथा समालोचनात्मक दृष्टि से भी बातें हुईं। कई लेखकों के आलेख पढ़े गए।

पहले सत्र में १०० वर्षों से मॉरीशसीय हिन्दी साहित्य अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य के लिए प्राथमिक के रूप में तथा भारत देशों में हिन्दी साहित्य लेखन में अग्रणी रहा जिसने अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी भाषा की स्थापना के लिए अमूल्य योगदान दिया। इसी विशेष संदर्भ में विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा मॉरीशसीय हिन्दी साहित्यकारों को मॉरीशसीय हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया था। साहित्यकारों को चयन करने के लिए गठित समिति ने देश के प्रमुख १२ साहित्यकारों को संस्थागत व व्यक्तिगत रूप से सम्मानित करने के लिए चुना था और वे हैं – १. आर्य सभा मॉरीशस / सम्मान पत्र सभा के वर्तमान प्रधान श्री हरिदेव रामधनी ने लिया, २. हिन्दी प्रचारिणी संस्था स्वरूप प्रो० बासुदेव विष्णुदयाल (मरणोपरान्त), ३. हिन्दी लेखक संघ के संस्थापक दिवंगत डा० मुनीश्वरलाल चिंतामणि, ४. हिन्दी परिषद् के दिवंगत संस्थापक तथा साहित्यकार श्री सोमदत्त बखोरी, ५. कवि ब्रजेन्द्रकुमार भगत, ६. इन्द्रधनुष हिन्दी परिषद् के संस्थापक लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण, ७. साहित्यकार अभिमन्यु अनत, ८. उपन्यासकार रामदेव धुरंधर, ९. हिन्दी लेखक संघ के महामन्त्री, वर्तमान में मान्य प्रधान कवि-लेखक इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, १०. हिन्दी सेवी १०१ वर्षीय श्री धनपत, ११. वयोवृद्ध हिन्दी सेवी अध्यापक श्री लक्ष्मी प्रसाद मंग्रू और १२. एक मात्र हिन्दी लेखिका श्रीमती भानुमति नागदान।

इन संस्थाओं व साहित्यकारों को उनकी अग्रणी तथा कर्मठ हिन्दी सेवा तथा साहित्योन्नय में योगदान के लिए 'विश्व-भाषा हिन्दी सम्मान' से विभूषित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री, डा० वसंत कुमार बनवारी के करकमलों सम्मान पत्र प्रदान किया गया ।

विश्व हिन्दी सचिवालय को मॉरीशस हिन्दी साहित्य शताब्दी समारोह के भव्य आयोजन तथा संस्थाओं व साहित्यकारों को 'विश्व भाषा हिन्दी सम्मान' प्रदान कर हौसला बढ़ाने के लिए जितनी भी प्रशंसा की जाए थोड़ी ही होगी।

मधुर वाणी रहस्य

श्रीमती प्रियम्वदा जीबन

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतल करपृष्ठे।

हे परमात्मा ! **'वाक्-वाक्'** - मेरी वाणी यश और बल से भरपूर हो, इसी तरह मेरे **'प्राणः'** - प्राण, **'चक्षुः'** - आँखें, **'श्रोत्रं'** - कान, **'नाभिः'**- नाभि, **'हृदयम्'** - हृदय, **'कण्ठः'**- गला, **'शिरः'** - सिर, **'बाहुभ्यां'** - दोनों भुजाएँ तथा **'करतल'** - हथेली, **'करपृष्ठे'** - हाथ का पिछला भाग और मेरे शरीर के सब अंग, **'यशोबलम्'** - यश और बल से भरपूर हो। मेरे शरीर के अंग-अंग स्वस्थ और निरोग हो।

हे अन्तर्यामिन् ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि, मैं जान-बूझकर अपनी ज्ञान-कर्म इन्द्रियों से अर्थात् वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और करपृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूँ, ऐसी कृपा करें।

'वाक्-वाक्' किसी महान् कवि ने कविता के स्वरूप इस तरह से सजाया है ।

वाक् शक्ति आपने दी जो हमें कर अति कृपा ।
सो हमारी हे दयामय शुद्ध वाणी हो सदा ।।

जिसकी वाणी में सम्पूर्ण माधुर्य हो वही आदर्श वाणी कहलाती है। कहते भी हैं कि,

शब्द सम्भाल कर बोलिए शब्द के हाथ न पाँव ।
एक शब्द करे औषधि एक शब्द करे घाव ।।

इन दो अक्षरों वाला शब्द यदि मनुष्य समझ जाय तो विश्व शान्ति निश्चित है। अपने मन में कुविचार को स्थान न देवें तो बुद्धिजीवी को इसी में भला है। यह अनुपम वरदान परम पिता परमात्मा द्वारा मनुष्य मात्र को ही प्राप्त है। जिसको पाकर वह सुबह और शाम इसी को प्रार्थना के माध्यम् से मीठी वाणी बोलने का प्रण करता है। अतः व्यक्ति विचारकर एवं बोलकर अपनी मनोवृत्ति प्रकट करता है। यह मन के भाव प्रकट करने का ढंग था प्रकार मात्र है।

हमारे मन में समय समय पर विचार भाव, इच्छाएँ, अनुभूतियाँ आदि उत्पन्न होती हैं। वही हम बोलकर दूसरों तक प्रकट करते हैं। प्रत्येक नया शब्द एक नए विचार का चित्र है। उसी चित्र को आधार मानकर हम अपना परिवार, समाज एवं राष्ट्र को उन्नत देखना चाहते हैं। क्योंकि मन में एक अच्छा विचार उत्पन्न होने से वह ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है। एक उत्तम विचार एक व्यक्ति को, एक घर-गृहस्थी को, एक समाज को, एक देश को डूबने से बचा सकता है, राष्ट्र आबाद हो सकता है। उसके विपरीत कुविचार द्वारा सब चौपट हो सकता है। अर्थात् व्यक्ति का जीवन, घर-गृहस्थी का वातावरण, समाज एवं राष्ट्र का बना बनाया खेल सब एक क्षण में बरबाद हो सकता है।

क्रमशः

त्रिओले आर्य समाज का शताब्दी समारोह

१९१३-२०१३

त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज शाखा नं० ६० का शताब्दी समारोह शुक्रवार १५ मार्च से लेकर रविवार १७ मार्च २०१३ तक तीन दिवसीय शताब्दी समारोह बड़ी भारी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। तीन दिनों के इस शताब्दी समारोह में : फ़ों जी साक, पाम्प्लेमूस, मोंसेल्माँ, प्वेंत ओ पीमाँ, रिव्येर जी राँपार, प्वेंत ओ कानोनियें, त्रु ओ बीश, ऑसेनाल, आमोरी, पेरेबेर, ग्राँ बे, नुवेल देकुर्वेत, सेंत क्रुआ, गुडलेन्स, लेस्पेरांस त्रेबीशे, त्रुदो दुस, युनियनवेल, प्लेनदेरोश, लावेनीर सें प्येर, देपीने, मोंताईं लोंग, मोका, पायोत, पोर्ट लुईस, वाकुआ, रोज़हिल, क्युर्पीप .... आदि। आदि गाँवों और शहरों से त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज के शुभ चिन्तक श्रद्धालु जन बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ इस समारोह में भाग लेने आए हुए थे। तीन बुतिक आर्य समाज का विशाल आँगन और यज्ञशाला बड़े ही सुन्दर ढंग से सजाया गया था जो देखने में बड़ा ही सुन्दर लगता था। तीनों दिन मौसम बड़ा ही सुहाना था और प्रतिदिन हॉल लोगों से खचाखच भरा हुआ था। सभी लोगों के दिल में उत्साह और चेहरे पर खुशी की झलक दिखाई दे रहा था।

पहले दिन शुक्रवार १५ मार्च २०१३ को ४.०० बजे से ध्वजोत्तोलन के बाद पंडिता माला रामनोथ, पंडिता दम्यन्ती चिन्तामणि और पं० दर्शन दुखी जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। साज़ संगीत के माध्यम से भजन कीर्तन का कार्यक्रम चला।

समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी ने औपचारिक स्वागत के बाद त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज के शुरू पचास वर्षों की एक ऐतिहासिक झाँकी प्रस्तुत की जिसे श्रोताओं ने बड़े ध्यान से सुना और सराहा। हिन्दी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति जी का एक सारगर्भित भाषण हुआ। श्रीमती सुकन जी के लघु वक्तव्य के बाद आर्य सभा के महा मन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने तीन बुतिक आर्य समाज की सराहना करते हुए एक बढ़िया भाषण दिया। अन्त में प्रसाद से सब लोगों का मुँह मीठा किया गया।

दूसरे दिन शनिवार १६ मार्च को यज्ञ और भजन-कीर्तन के बाद अपने स्वागत भाषण के अन्तर्गत समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी ने दूसरे पचास साल के ऐतिहासिक कार्यों का उल्लेख किया। आर्य सभा के अधिकारियों द्वारा डा० निऊर जी, डा० उदयनारायण गंगू जी और श्री सत्यदेव प्रीतम जी के कर कमलों से ऐतिहासिक चित्रों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ तो प्रधान हितलाल मोधू जी द्वारा तैयार किया गया था। प्रदर्शनी में सौ साल के मुख्य मुख्य कार्यों को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया था जिसे जनता ने बेहद पसन्द किया। पाँप्लेमूस आर्य ज़िला परिषद् के प्रधान श्री गिरजानन्द तिलक जी के छोटे वक्तव्य के बाद डा० उदयनारायण गंगू जी और श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने अपना संदेश देते हुए समाज के प्रति अपनी शुभकामनाएँ भेंट की। आर्य सभा की ओर से धार्मिक पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। संध्या के बाद प्रसाद वितरण के साथ दूसरे दिन का कार्यक्रम पूरा हुआ।

तीसरे दिन रविवार १७ मार्च २०१३ को सुबह नौ बजे से यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। श्री रोशन हरनोम जी कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे। हारमोनियम, तबला और सितार पर श्रीमान और श्रीमती कटक जी के साथ-साथ श्री विश्वजीत और धर्मानन्द रामनोथ जी के निर्देशन में तीनों दिन, तीन बुतिक आर्य समाज की भजन मंडली द्वारा साज़ संगीत के माध्यम से मधुर आवाज़ में प्रार्थना एवं भजन, कीर्तन का बढ़िया कार्यक्रम चला जो प्रशंसनीय रहा। आर्य सभा मॉरीशस के आर्य युवक संघ की प्रधाना बारिस्टर श्रीमती पुनम सुकन तिलकधारी जी के महत्वपूर्ण भाषण के बाद पाँच साल का एक छोटा बालक नकुल दसोई जी ने अपनी तोतली बोली में गायत्री मन्त्र और मृत्युंजय मन्त्रों को बोलकर सभी लोगों का दिल जीत लिया। समाज के उप-प्रधान श्री जानकी प्रसाद नन्दलाली जी ने अपना संदेश सुनाया। आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी ने समाज को बधाई देते हुए मॉरीशस में आर्य समाज द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों की चर्चा की।

तत्पश्चात् कला एवं संस्कृति मन्त्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी जी, कृषि उद्योग एवं खाद्य सुरक्षा मन्त्री माननीय सत्यव्यास फ़ोगू जी और युवा और क्रीड़ा मन्त्री माननीय सत्यप्रकाश (देवानन्द) रीतू जी के कर कमलों से शताब्दी स्मारक (प्लाक) का अनावरण हुआ। कला एवं संस्कृति मन्त्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी जी ने अपने भाषण में इस देश की राजनीति में आर्य समाज के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा करते हुए तीन बुतिक आर्य समाज को अपनी शुभकामनाएँ भेंट कीं। त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज के मन्त्री श्रीमती रजनी मंगरू जगेसर जी ने सब लोगों का स्वागत करते हुए तीन बुतिक आर्य समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी द्वारा किये गए महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी ने अपने स्वागत भाषण के दौरान तीन बुतिक आर्य समाज की स्थापना से लेकर अब तक के मुख्य कार्यों का उल्लेख किया। ***शेष भाग पृष्ठ ४ पर***

गतांक से आगे

ऋषि दयानन्द की वेदाधारित समग्र क्रान्ति

डॉ० भवानीलाल भारतीय

स्वामी दयानन्द की संन्यास दीक्षा - स्वामी दयानन्द के संन्यास ग्रहण में प्रमुख दो कारण दिखाई देते हैं। प्रथम, परमात्मा के सच्चे स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना और मृत्यु के रहस्य को जानना। आगे चलकर जब उन्होंने स्वदेश के विभिन्न भागों में भ्रमण कर उक्त शंकाओं का समाधान जानना चाहा तो उन्हें पता लगा कि समस्या उससे कहीं अधिक गम्भीर तथा भयंकर है जितनी कि वह दिखाई देती है। उन्हें धर्म के नाम पर सर्वत्र पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास तथा अन्धश्रद्धा दिखाई दी। उनकी जीवनी में एक प्रसंग आता है जब उन्होंने परिस्थितियों की भयावहता को देखा और उसे लाइलाज पाया। तब उनके हृदय में निराशा की काली घटाएँ उमड़ पड़ीं और एक बार तो विचार आया कि जीवन में क्या रखा है, क्यों नहीं शरीर को हिमालय की इन बर्फानी उपत्यकाओं में विसर्जित कर दूँ ? किन्तु तत्क्षण निराशा दूर हो गई और दूसरा विचार मन में कौंध गया कि मर जाना तो कोई पुरुषार्थ नहीं है, अपितु ज्ञान प्राप्त कर परोपकार में स्वयं को लगाना ही सच्चा पुरुषार्थ है।

दृष्टव्य - नव जागरण के पुरोधा ।

लोकोपकार के इसी श्रेष्ठ विचार ने आगे चलकर स्वामी दयानन्द को स्वधर्म, स्वदेश तथा अखिल मानवता के हित के लिए स्वयं को सर्वात्मना समर्पित करने की प्रेरणा दी। उनके जीवन में हम देखते हैं कि जब-जब उन्हें लोकसंग्रह के मार्ग को छोड़कर केवल स्वकल्याण के दम पर चलने के लिए कहा गया, तब-तब उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि निज का हित कर लेना कोई बहुत बड़ा पुरुषार्थ नहीं है। मानव जीवन का लक्ष्य तो सर्वभूत - हित में लगकर निखिल मानवता की सेवा में स्वयं को लगाया है। उनके जीवन के कतिपय ऐसे प्रसंग दृष्टव्य हैं – उत्तराखण्ड भ्रमणकाल में ऊखीमठ के महन्त ने जब उनके तप, त्याग, वैराग्य और विद्वता को देखा तो उन्हें परामर्श दिया कि वे इधर-उधर का देशाटन छोड़कर इस मठ में उनका शिष्यत्व स्वीकार कर लें और महन्त पद के अधिकारों और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का उपभोग करें। वीतराग दयानन्द का स्पष्ट उत्तर था कि यदि उन्हें धन-सम्पत्ति और वैभव की लालसा होती तो उनके पिता की सम्पत्ति कम नहीं थी। जब उस पैतृक वैभव का मोह न रखकर उन्होंने वैराग्य का मार्ग ग्रहण कर लिया तो अब इस पथ से उन्हें कोई विचलित नहीं कर सकता। लोकहित उनकी प्रथम और अन्तिम कामना है।

लगभग ऐसा ही उत्तर उन्होंने सोरों के गंगातट पर स्वामी कैलाश पर्वत नामक एक संन्यासी को दिया जिसने उन्हें परामर्श दिया था कि उच्च योग साधनायुक्त दयानन्द को लोकहित के पचड़े में न पड़कर समाधि सिद्धिपूर्वक ब्रह्मानन्द का आस्वादन कर अपने परलोक को बनाना चाहिए। स्वामी दयानन्द का स्पष्ट उत्तर था – 'यदि मैं एकाकी समाधि सिद्ध कर परमार्थ के पथ पर चल पड़ूँ तो यह मेरा शुद्ध स्वार्थ होगा। **मैं तो जन-जन को क्लेश-कष्ट, आपद-विपद से मुक्ति दिलाकर अधिक से अधिक लोगों की भलाई करना चाहता हूँ।** दयानन्द की इसी लोकानुरंजन वृत्ति ने सर्वस्व त्यागी होने पर भी उन्हें एक महान् वैचारिक क्रान्ति का सूत्रधार बनाया और उनका यह क्रान्तिकारी चिन्तन अध्यात्म, धर्म, समाज, राष्ट्र तथा निखिल मानव हित का कार्यक्रम लेकर संसार के सामने आया ।

यहाँ हम ऊपर संकेतित बिन्दुओं को शीर्षक बनाकर स्वामी दयानन्द की समग्र क्रान्ति की एक रुपरेखा प्रस्तुत कर रहे हैं। ध्यान रहे कि दयानन्द के चिन्तन की यह क्रान्तिकारी विचारधारा सर्वतोभावेन वेदों के उदात विचारों पर आधारित है ।

क्रमशः

प्रेषक - श्री हरिदेव रामधनी,आर्य रत्न,
प्रधान आर्य सभा मोरिशस

आर्य जगत् - सप्ताह रविवार, ०३ मार्च २०१३

D.A.V. DEGREE COLLEGE

(run under the aegis of Arya Sabha Mauritius)

ENROLMENT OF STUDENTS 2013-2014

(Degree and Post-graduate Courses offered by the prestigious Kurukshetra University, Haryana, India)

Interested parties wishing to enrol for the Academic Year 2013-2014 are hereby requested to fill in the admission forms available at the reception desk of the Arya Sabha Mauritius, 1,Maharshi Dayanand Street, Champ de Mars, Port Louis or the D.A.V. Degree College, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles as from 11th March to 30th May, 2013.

Time Monday to Friday : 9.30 a.m. to 3.30 p.m.
Saturday : 9.00 a.m. to noon.

COURSES OFFERED *(Full Time and Part Time)*

B.A (Hons) English
B.A (Hons) Hindi
B.A (Hons) Philosophy
Bachelor of Information and Management (BIM)
Bachelor of Computer Applications (BCA)
M.A Hindi
M.A Philosophy

The courses are duly approved by the Tertiary Education Commission (TEC)

For further information please call us on Phone No. 212 2730 or 760 1105.

Students can also visit our website : www.aryasabhamauritius.mu

वेद प्रचार समिति

रिपोर्ट २०१२

वेद प्रचार समिति आर्य सभा मोरिशस की उपसमितियों में मुख्य मानी जाती है, जो आर्य पुरोहित मण्डल एवं सभी आर्य ज़िला समितियों के सहयोग से पूरे देश में तथा सभी आर्य समाजों एवं आर्य महिला समाजों के स्तर पर वेद प्रचार का कार्य करती है।

प्रधान - डा० उदयनारायण गंगू, *आर्य रत्न*, *मन्त्री* - श्री रवीन्द्रदेव शिवपाल, *सदस्य* – पं० माणिकचन्द बुद्धु, पं० धर्मेन्द्र रिकाय, पं० महादेव सुनकसिंग, पं० शिवशंकर रामखेलावन, श्री बालचन्द तानाकुर, श्री जगदीश मकुनलाल, श्री अभयदेव रामरूप, पं० देवजीत श्रीमन्नतो, पंडिता सत्यम् चमन, श्री बिसुनदेव बिसेसर, पं० सत्यानन्द फाकू, पं० जीवन महादेव, पं० सतीश बितुला, पं० विरजानन्द उमा, पंडिता अनजनी महिपथ, श्री भगवानदास बुलाकी, श्री सत्यदेव प्रीतम, श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, *एम.एस.के, आर्य भूषण,* श्री हरिदेव रामधनी, *आर्य रत्न पदेन (Ex-Officio)*।

वेद प्रचार समिति सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। कार्य के आयोजन एवं नियन्त्रण निमित, समिति की बैठक नियमित रूप से हर मास के तीसरे शुक्रवार को लगती है।

(१) सभी आर्य पर्वों को सिद्धान्तानुसार सभी आर्य मंदिरों में भव्य रूप से मनाने का पूर्ण प्रबन्ध किया गया।

(२) दूरदर्शन (टी.वी.) पर सीधे प्रसारण के माध्यम से ऋषि बोध एवं ऋषि निर्वाण दिवस/दीपावली पर्व को राष्ट्रीय स्तर पर भव्यता और पूर्ण सफलता के साथ मनाया गया।

(३) जून मास को सत्यार्थप्रकाश मास घोषित किया गया और महर्षि दयानन्द के कालजयी ग्रन्थ पर आधारित कार्यक्रम किए गए ।

(४) श्रावणी महोत्सव का आयोजन भव्य रूप से किया गया। इसका प्रारम्भ रामावतार मोहित हॉल l'Agrement St. Pierre, में किया गया और पूर्णाहुति Chiranjeev Bhardwaj Ashram में हुई ।

(५) आचार्य आशीष द्वारा वेद प्रवचन के अलावा युवा पीढ़ी के लिए कार्यशालाएँ चलाई गईं ।

आचार्य जी ने शाकाहारी भोजन पर बल दिया ।

(६) रेडियो, टेलिविजन के माध्यम से एवं कई सामाजिक संस्थाओं में डा० उषा शर्मा जी द्वारा तीन महीने तक धार्मिक प्रचार भव्य रूप से हुआ।

(७) पुरोहित मंडल के साथ आचार्य आशीष ने मिलकर एक पाँच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जो सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई ।

(८) रेडियो पर वैदिक वाणी कार्यक्रम के माध्यम से वेद मंत्रों के आधार पर वेद संदेश जनता तक पूरे साल पहुँचाया गया।

(९) रेडियो के माध्यम से ही ऋषि बोध, सत्यार्थप्रकाश जयन्ती, श्रावणी महोत्सव, ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली, गंगास्नान, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस और मकर संक्रान्ति के अवसर के विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से वैदिक संदेश दिए गए ।

१०.०२. २०१३ को निर्घिन भवन क्युर्पिप में संध्या, मंत्र-पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें मोरिशस को कोने-कोने से २० प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी को १० मार्च २०१३ को डी.ए.वी. मोर सेल्माँ सें आन्द्रे में पुरस्कृत किया गया ।

रवीन्द्रदेव शिवपाल
मन्त्री

Simple Tools For Anger Management

Dipnarain Beegun

Anger is such a cyclone that blows out the light of reason and you notice the devastation only when it is abated. Anger is a fire that needs to be extinguished, before it causes an irreparable damage to your life. When angry :

1. Drink a glass of water and cool down.
2. Count 1, 2, 3, 4 up to 100 or more.
3. Don't argue and retort, but keep quiet.
4. Leave the place at once and go for a walk.
5. Shut yourself in your room and do some deep breathing.
6. Take a pillow or punching bag and go on striking with your fist.
7. Overcome your hot temper by chanting God's name.
8. Repeat Om Shanti, Om Shanti, Om Shanti (Grant me peace).
9. Observe silence for two hours or more.
10. Eat sattvic food: fruit, vegetable, milk etc.
11. Listen to soothing music or devotional songs.
12. Burn some sweet smelling scents or light perfumed candle.
13. Put fresh flowers in your room.
14. Look at saintly pictures.
15. Read sages' wisdom and go to rest and sleep.
16. Lick honey or eat chocolate and resolve not to blame, defame and insult relatives and friends.
17. Return to your normal nature of remaining calm, quiet, joyful and loving.
18. Use your supreme intelligence to solve problems and enjoy life which is full of gifts and gems.
19. Poisonous arrows of tongue cannot hurt you. You are not the body, but the soul which cannot be affected in any circumstances.
20. You are love, light, silence and peace by nature. Do not create the negative feelings. Anger is your greatest enemy. Control it before it rides you to your downfall. Wrath causes breakages, injuries and regrets. Like a fire-fighter, act promptly to extinguish the fire of anger, before you get burnt, dejected and depressed. Nobody can escape from anger (even Sage Durvasa could not get rid of it), but everybody can manage to use the extra-surging energy (of wind and fire) into profitable work. Control anger to become a happy and loving person. Create a peaceful world for yourself, for your family and for others. Yes, you can.

KARMA YOGI BALDEO DOMUN

Deputy Head Teacher MSK

EARLY LIFE

Enlightened Baldeo Domun was born against all odds Morcellement St Andre on the 6th of April 1925. His father Seebhajun Domun was a skilled labourer. His mother Beeptee Jhugroo was still very young around 15 yrs old when he was born. They did not have any land of their own at Morcellement St. André. They were living on the land and house that belonged to my father's uncle Ramleela Domun. He did not have any children and even at that time had bequeathed his property to my grandfather. So his future at Morcellement St. André was quite promising because he was to get a plot of 25 perches of residence land with two houses and another plot of agricultural land at Morcellement St. André.

Nevertheless it so happened that when my father was five (5) years old, my grandparents were forced to shift from Morcellement St. André' to Boulingrin Long Mountain as the brothers and sisters of my grandmother turned orphans and developed chicken pox and there was nobody to cater for them. My grandmother did not own any land or house at Boulingrin and was residing on the land of other relatives in the vicinity.

In great hardship my grandfather Seebhajun Domun had to settle in Boulingrin with the relatives of his in laws. At that time his life was very miserable. As a stout labourer he was working day and night to raise the whole family and Master 'Ramchandar'. Baldeo Domun started his schooling at Créve Coeur Govt school. He was a very bright pupil and always stood among the best in his class. As a born leader he started to lead even at primary school. He was the class captain and even leapfrogged to the scholarship class from fifth standard skipping the sixth standard class.

QUITTING SCHOLARSHIP CLASS

When Rarnchandar was nine (9) years old my grandfather got seriously ill and was bedridden and was no longer fit to work neither as a labourer for land owner or for the sugar barons in their "tablissement". The breadwinner of the family was laid off. My father had no other choice left other than to quit primary school and start working in the sugarcane field at the tender age of 9 yrs as a child labourer for 25 cents a day together with my grandmother to cater for the family. The work started very early at about 05.00 hrs proceeding in the fields of the land owners with a basket of manure on your head. After having worked for the whole day whilst returning home, you have to carry another burden of grass for the owner.

In those days he had to work from morning till late in the afternoon, six days a week on Sundays he had to go on 'corvée' cleaning the yard of the mill owners up to noon whilst the ruling class was attending Sunday mass-such was the life of a child labourer in colonial Mauritius. As my Grandfather was not recovering, Master Ramchandar had to forget his scholarship class and had to quit school for good. The caring and diligent, teacher and head teacher did call at the residence of my family at Boulingrin to convince my grandfather that enlightened Baldeo had a bright future and that it was imperative that he should join school a new.

At such a conjuncture can someone imagine the despair, agony and state of mind of a father who was sick in bed and unable to work and accept the devastating decision of being unable to send his son of 9 years to the sugarcane field and not to the scholarship class. He had given his directive to my father (young Baldeo) to go to school but as my father later said there was not enough to eat, and there was no way out. Thus all the tears and broken hearted wish of my grandfather remained a dead letter.

WORKING CAREER AS LABOURER

Thus the working career of Enlighten Baldeo started very early as a child labourer in sugarcane fields. Day by day he started to cater for the whole family including his sisters and brother. He was projected as head of the family at very tender age and he became the sole 4eadwinner. Master Baldeo worked very hard as a labourer till the age of 33. He married his sister, got married himself and also catered for his younger brother. His interest in his studies never ended whist he was working in sugarcane fields, he was always busy studying during lunch time whilst his fellow colleagues were smoking and cracking jokes. On Sundays he was regularly attending his Hindi classes at Hindi Bhawan and he was successful in his Exams.

Eventually beyond all expectation at the age of 33, the last chance to join Govt Service he as recruited as a Hindi Teacher at the Teacher's Training School at Beau Bassin. One can just imagine the amazement of the inhabitants for someone residing at the extreme boundary of Boulingrin joining Government Service in those days of taboos and prejudices.

Young Baldeo had always been active in social fields, he was the first to launch a 'Baitka' at Boulingrin to teach Hindi and it is thanks to him that others later joined as Hindi Teachers and many children were able to study Hindi and enhance their character and social well being.

to be continued .....

Mr Bhojesh Domun,
LLB Hons. London UK

पृष्ठ ३ का शेष भाग

श्री रोशन हरनोम जी ने एक वार्तालाप प्रस्तुत किया जिसमें कुमारी जीतू जी ने भाग लिया था। त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज की ओर से श्री बाबूराम जगना, श्री प्रेमहंस श्रीकिसुन,ओ.एस.के, आर्य भूषण और श्री प्रेमदत्त फोगू जी को लम्बे समय तक आर्य समाज की सेवा के लिए स्व० श्री भरत मोधू आवार्ड से सम्मानित किया गया। इतिहासकार श्री प्रह्लाद रामशरण जी का भाषण हुआ। समाज के उप-प्रधान श्री विद्यानन्द सोब्रन जी के वक्तव्य के बाद कुमारी किरतिसा और द्वीती मंगरू जी द्वारा मन्त्र पाठ और हिमान्चू हरनोम द्वारा कविता पठन हुआ। समाज के प्रधान श्री हितलाल मोधू जी द्वारा त्रिओले, तीन बुतिक आर्य समाज की ओर से चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई थी। प्रदर्शनी में चित्रों के माध्यम से बीते सौ सालों की एक ऐतिहासिक झाँकी प्रस्तुत की गई थी। दर्शकों ने प्रदर्शनी की बेहद प्रशंसा की। प्रदर्शनी देखने के लिए लोगों का ताँता लगा हुआ था। कार्यक्रम की समाप्ति पर पंडित दर्शन दुखी जी ने सब लोगों को धन्यवाद दिया।

अन्त में एक सहभोज के साथ तीन दिवसीय शताब्दी समारोह बड़ी भारी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। समाज के कर्मठ सेवक श्री अमल चिन्तामणि जी ने अपनी बड़ी टी.वी. सेट लाकर तीनों दिन की विडिओ रिकोर्डिंग टी.वी. पर प्रसारित की जिसे सब लोगों ने आनन्द पूर्वक देखा। यह शताब्दी समारोह स्मृति पट पर एक यादगार बनकर रह जाएगा।